फरवरी २०१७

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

अक्रम एक्सप्रेस

संपादक:
डिम्पल मेहता
वर्ष : ४ अंक: ११
अखंड क्रमांक: ४७
फरवरी २०१७

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

धीरज

बालमित्रों, संपादकीय

अभी तक आपने इस कहावत को कितनी बार सुना होगा कि "सब्र का फल मीठा होता है"। इस विषय की बोधकथाएँ भी पढ़ी होंगी। लेकिन फिर भी हम सब्र नहीं रख सकते। जब देखो तब जल्दबाज़ी, जल्दबाज़ी और जल्दबाज़ी। उससे काम सुधरने के बजाय बिगड़ जाते हैं। अत: यह तय है कि अपनी समझ में कहीं भूल रह गई है।

तो आइए, देखते हैं कि परम पूज्य दादाश्री इस विषय पर क्या कहते हैं। इस अंक में हमें उनके द्वारा दी गई समझ मिलेगी, जो सहजासहज ही हमें धीरज रखने में उपयोगी होगी।

-डिम्पल मेहता

ज्ञानी कहते हैं...

दादाश्री : यदि कभी कोई फ्रेन्ड हम पर बिना बात के ही चिढ़ रहा हो तो हमें यह नहीं समझना चाहिए कि वह घर से झगड़ा करके आया है या फिर रास्ते में कहीं झगड़ा हो गया होगा। यदि वह अच्छे मूड में नहीं है तो हमें उसे शांत करने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि हम उससे चिढ़ जाएँगे तो क्या होगा?

इसलिए हमें थोड़ा धीरज रखना चाहिए कि यह गाड़ी गरम हो गई है, ज़रा ठंडी होने दें। फिर धीरे से बातचीत करेंगे और वह भी थोड़ी हल्की-फुल्की... उसे थोड़ा शांत करेंगे। समझकर काम नहीं लेना चाहिए? यदि गाड़ी गरम हो जाती है तो उसके साथ ठीक से काम लेते हो लेकिन यहाँ ऐसा नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : हम कई बार समझाते हैं फिर भी वह नहीं समझे तो हम क्या करें?

दादाश्री : समझाने की ज़रूरत ही नहीं है। प्रेम रखो। और उसे समझाओ, आराम से।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसा धीरज होना चाहिए न?

दादाश्री : धीरज रखने जैसी चीज़ नहीं है, धीरज सीखने जैसी चीज़ है। धीरज किस तरह सीख सकते हैं? धीरजवाले के पास बैठकर, धीरजवाले को देखकर सीख सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी आपने जैसा कहा वैसे, धीरज रखने से किसी भी काम की अपने आप सेटिंग हो जाती है?

दादाश्री : धीरज रखोगे तो सभी रास्ते अपने आप ही मिल जाएँगे लेकिन धीरज रहता नहीं है और जल्दबाज़ी करके सब बिगाड़ देता है।

प्रश्नकर्ता : धीरज नहीं रहता और ऐसा करूँ, वैसा करूँ, इस तरह हो जाता है।

दादाश्री : हाँ, और यह कर दूँ, वह कर दूँ, इससे सब उलझा देता है। ट्रेन पकड़नी हो, वहाँ भी उसे धीरज नहीं रहता, तब शांति से चाय पीएगा? नहीं। उसे तो गाड़ी अभी आएगी, गाड़ी अभी आएगी, इसमें ही होता है। उससे कहें कि "भाई, ज़रा यहाँ आओ न! बातचीत करनी है।" लेकिन वह नहीं सुनेगा। वैसे ही अधीरता से ऐसा कर दूँ, वैसा कर दूँ। इस तरह वह थकान और क्लेश का अनुभव करता है।

धीरज की कसौटी

युवराज ने ऊँचे स्वर में मंत्री से पूछा, "मंत्री जी, मेरी पोशाक तैयार हुई या नहीं?"

मंत्री जी ने युवराज से कहा, "कुंवर जी, बस दो दिन में तैयार हो जाएगी। थोड़ा धीरज रखिए।"

लेकिन युवराज धीरज कहाँ से लाए? युवराज में तो तनिक भी धीरज न था। कोई काम शुरू हुआ कि "पूरा हुआ या नहीं..." की आवाज़ें आने लगती। किसी काम में थोड़ा सा भी इंतज़ार करना पड़े तो गुस्सा होकर सभी को दौड़ा देते और काम बिगड़ जाता।

राजा ने कई बार युवराज को समझाने की कोशिश की। लेकिन कुछ फर्क नहीं पड़ा। कई बार राजा चिंतित हो जाते कि युवराज धीरज के बिना राज्य कैसे चलाएँगे?

एक दिन, राजा ने राजगुरु के सामने अपनी चिंता व्यक्त की, "गुरु जी, आगे जाकर युवराज राजा बनेंगे। यदि राजा में धीरज नहीं होगा तो प्रजा की क्या हालत होगी!" हाथ जोड़कर राजा ने राजगुरु से विनती की, "आप युवराज को धीरज सिखाएँगे?"

थोड़ा सोचकर गुरु जी बोले, "धीरज तो देखकर सीखा जाता है। धीरजवाले के साथ रहने से धीरज सीखा जाता है। युवराज को एक साल के लिए मेरे पास भेज सकते हो?"

राजा तुरंत मान गए। दूसरे दिन, राजगुरु युवराज को अपने साथ लेकर चल पड़े। अभी तो थोड़ा ही समय बीता था, कि युवराज तो अधीर हो गए।

युवराज ने पूछा, "गुरु जी, हम कहाँ जा रहे हैं?"

गुरु जी ने कहा, "युवराज थोड़ा धीरज रखो।"

लेकिन युवराज धीरज कहाँ से रखे? यात्रा के दौरान युवराज ने एक ही सवाल गुरु जी से अनेकों बार पूछ लिया। लेकिन युवराज की अधीरता देखकर गुरु जी ने धीरज नहीं खोया।

लंबा समय बीत गया। अंत में गुरु जी युवराज को लेकर अपने निर्धारित स्थल पर पहुँच गए। नदी के किनारे एक छोटी सी झोंपड़ी की ओर इशारा करते हुए गुरु जी ने कहा, "युवराज, थोड़ा समय हम यहाँ रहेंगे।"

"यहाँ? इस झोंपड़ी में?" युवराज के स्वर में बहुत निराशा थी।

"हाँ", गुरु जी ने संक्षेप में जवाब दिया।

युवराज से पूछे बिना रहा नहीं गया, "थोड़ा

समय? थोड़ा यानी कितना गुरु जी?"

"युवराज, यह तो आपके ऊपर निर्भर करता है। समय गँवाए बिना अपने भोजन की तैयारी करें। मैं चूल्हा जलाता हूँ। आप इस मटकी में थोड़ा पानी भरकर लाओ।"

गुरु जी ने चूल्हा जलाया और मिट्टी की हाँडी उस पर रखी। एक पोटली में से चावल के दाने निकालकर हाँडी में डाले। मटकी में से पानी हाँडी में डालते हुए गुरु जी ने युवराज से कहा, "जिस दिन आप चावल स्वयं पकाओगे, उस दिन हम राजमहल में वापस जाएँगे।"

"सचमुच?" युवराज के चेहरे पर एक मधुर मुस्कान आ गई। "कल सुबह ही मैं आपको चावल पकाकर खिलाऊँगा।"

> "हाथ जोड़कर राजा ने राजगुरु से विनती की, "आप युवराज को धीरज सिखाएँगे?""

"युवराज, आपका उत्साह देखकर खुशी हुई। लेकिन मेरी एक शर्त है! जिस मिट्टी की हाँडी में हम चावल पकाएँगे, वह आपको खुद ही बनानी पड़ेगी। इतना ही नहीं, चावल भी खुद के उगाए और पकाए हुए होने चाहिए।"

युवराज की मुस्कुराहट गायब हो गई।

दूसरे दिन गुरु जी युवराज को गाँव के कुम्हार के पास ले गए।

गुरु जी ने कुम्हार से निवेदन किया, "भाई, इस युवक को मिट्टी की हाँडी बनाना सिखाओगे? रोज़गार के लिए इसे मदद हो जाएगी। बदले में यह आपके काम में आपकी मदद करेगा।" कुम्हार तो खुश हो गया।

मिट्टी का गोला चाक पर रखते हुए कुम्हार बोला, "बैठो भाई, यहाँ नज़दीक बैठो, बहुत सरल काम है। मुझे देखकर तुम भी सीख जाओगे।"

धीरज और एकाग्रता से कुम्हार ने मिट्टी के गोले को हाथ से आकार दिया। जब बनकर तैयार हो गया तब कुम्हार ने संभालकर गोले को चाक से उतारा और सुखाने के लिए रख दिया। सूख जाने के बाद भट्टी में तपाने के लिए रखा।

इस पूरी प्रक्रिया को देखकर युवराज को बुखार आ गया। "इसका तो कब अंत आएगा! कब मैं बनाना सीखूँगा और कब राज्य में वापस लौटूँगा।"

कुम्हार ने मिट्टी का गोला युवराज के हाथ में दिया, "भाई, अब तुम प्रयत्न करो।"

जैसे ही युवराज ने गोला चाक पर रखा कि वह टूट गया। कुम्हार ने फिर युवराज को सही तरीका सिखाया। लेकिन गोला फिर टूट गया।

ऐसा कई दिनों तक चला। युवराज सीखते-सीखते अधीर हो जाते, लेकिन कुम्हार ने सिखाने में कभी धीरज नहीं खोया।

कुम्हार का धीरज युवराज के दिल में समा गया। "धन्य है यह कुम्हार! धीरज रखकर कितने आनंद में रहता है। यदि मेरे जैसा बेवकूफ शिष्य, मुझे मिला होता तो मैंने तो उसे कब का भगा दिया होता। और इस कुम्हार ने तो एक बार भी मेरे साथ ऊँची आवाज़ में

बात नहीं की।" इस तरह मन ही मन युवराज ने कुम्हार के धीरज की प्रशंसा की और खुद को भी ऐसी धीरज प्राप्त हो, ऐसी प्रार्थना की।

इस तरह दिन बीतते गए। धीरे-धीरे युवराज भी धीरज से काम करने लगे। जैसे-जैसे युवराज धीरज से काम करते गए, वैसे-वैसे उनकी काम में एकाग्रता बढ़ती गई और उन्हें काम में आनंद भी आने लगा। तोड़ते-फोड़ते, आखिर एक दिन युवराज से हाँडी बन गई। युवराज ने दिल से कुम्हार का धन्यवाद किया। युवराज हाँडी लेकर गुरु जी के पास पहुँचे। गुरु जी ने युवराज को बहुत शाबाशी दी।

दूसरे दिन युवराज गुरु जी के साथ किसान के पास पहुँचे। कुम्हार से मिली हुई धीरज की सीख युवराज को खेती करने में बहुत काम आई। बोने और काटने का समय युवराज ने धीरज से निकाला। ४-५ महीने के बाद जब खेत में फसल उगने लगी, तब अपने धीरज का फल देखकर युवराज बहुत खुश हुए। चावल की बोरी लेकर, युवराज गुरु जी के पास पहुँचे।

गुरु जी, आज मैं आपको चावल पकाकर खिलाऊँगा, ऐसा कहकर युवराज ने दो मुट्ठी चावल, मिट्टी की हाँडी में डाले।

अभी तो थोड़ी देर ही हुई थी, कि गुरु जी बोले, "युवराज, चावल पके या नहीं? अभी कितनी देर है?"

युवराज ने शांति से जवाब दिया, "बस, गुरु जी थोड़ी सी देर है।" चावल पके तब तक तो गुरु जी ने यही एक प्रश्न कई बार पूछ लिया। लेकिन युवराज ने धीरज नहीं खोया।

भोजन करते समय युवराज आराम से बोले, "गुरु जी, आज मुझे एहसास हुआ कि अपनी अधीरता से मैंने औरों को कितना दुःख दिया है। लेकिन अब मैंने धीरज का फल चख लिया है। अब मैं कभी भी अपनी अधीरता से दूसरों को दुःख नहीं दूँगा।"

गुरु जी युवराज को देखते ही रह गए। उन्होंने एक संतोष की साँस ली और मन ही मन अपने भावी राजा को वंदन किया।

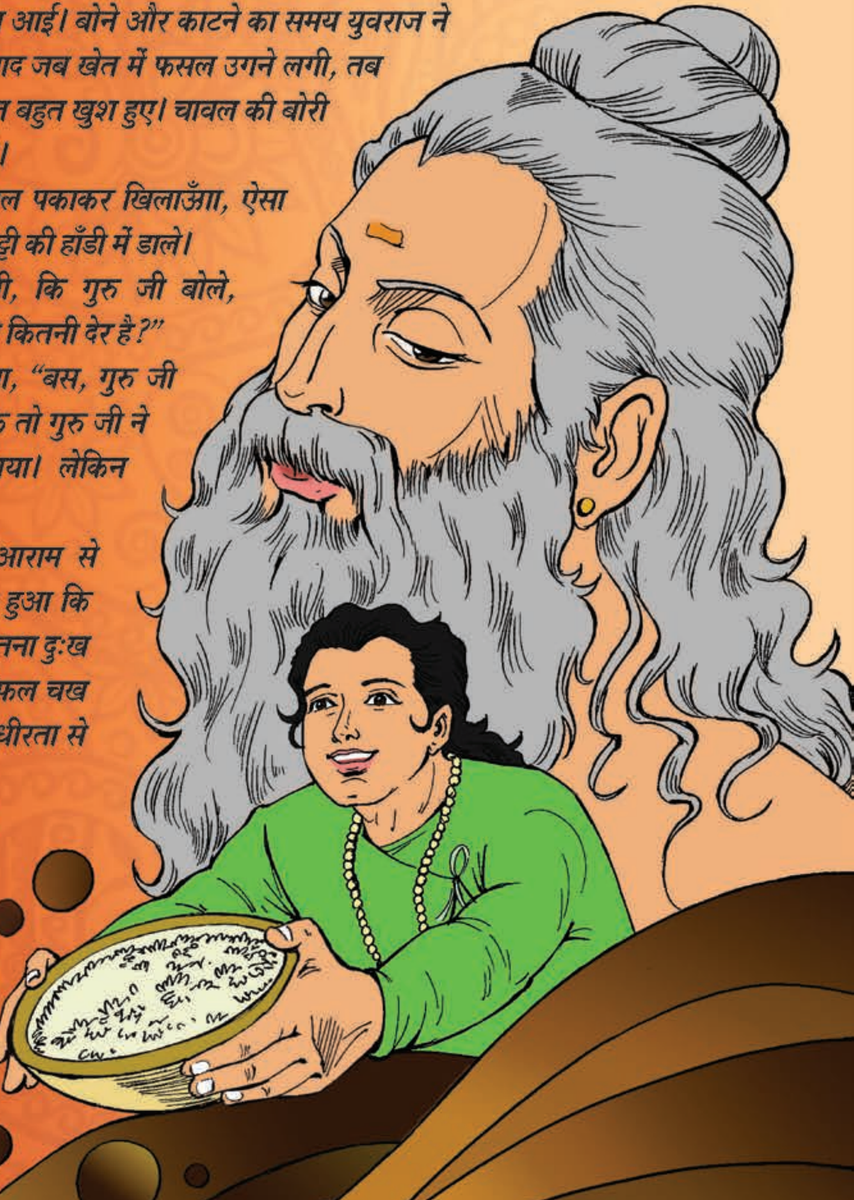

प्रत्येक चीज़ का अंत है इसलिए धीरज रखो।

हमारे यहाँ एक पार्टनर भाई थे। उन्हें बुरी आदत लग गई थी। वे रात को २ बजे आते। इसलिए फिर घर में सब सोचने लगे कि, भाई इनके लिए क्या करें? उन्हें डाँटें, मारें या घर में घुसने नहीं दें या इसका क्या उपाय है?

मैंने उनसे कहा कि कुछ बोलना नहीं है। वे जब आएँ तब आने दें, जब जाएँ तब जाने दें। हमें राईट भी नहीं बोलना है और रोंग भी नहीं बोलना है। राग भी नहीं रखना है, द्वेष भी नहीं रखना है। समता और करुणा रखनी है।

तो तीन-चार साल में वे भाई फर्स्ट क्लास हो गए लेकिन चार साल सब सहन किया। क्योंकि हर चीज़ का अंत होता है। आप में धीरज होना चाहिए और मान लो अंत नहीं है, लंबा समय होगा फिर भी डाँटकर या मारकर आप उसकी हेल्प नहीं करते बल्कि उसका और ज्यादा नुकसान ही करते हो। आप खुद का नुकसान करते हो और सामनेवाले का भी नुकसान करते हो। कौन सुधार सकता है? जो सुधरा हुआ हो वही सुधार सकता है। यदि हम सुधरे हुए हैं तो सामनेवाले को सुधारें लेकिन हमारा ही ठिकाना नहीं है तो...

प्रश्नकर्ता : सुधरा हुआ किसे कहेंगे? इसकी क्या व्याख्या है?

दादाश्री : किसी व्यक्ति को आप डाँटो फिर भी उसमें उसे प्रेम दिखे। आप उसे धमकी दो फिर भी उसे प्रेम दिखे, कि ओ...हो...हो... उनका मुझ पर कितना प्रेम है!

दादाजी की शोध

निष्कर्ष पर आने से पहले धीरज से काम लो

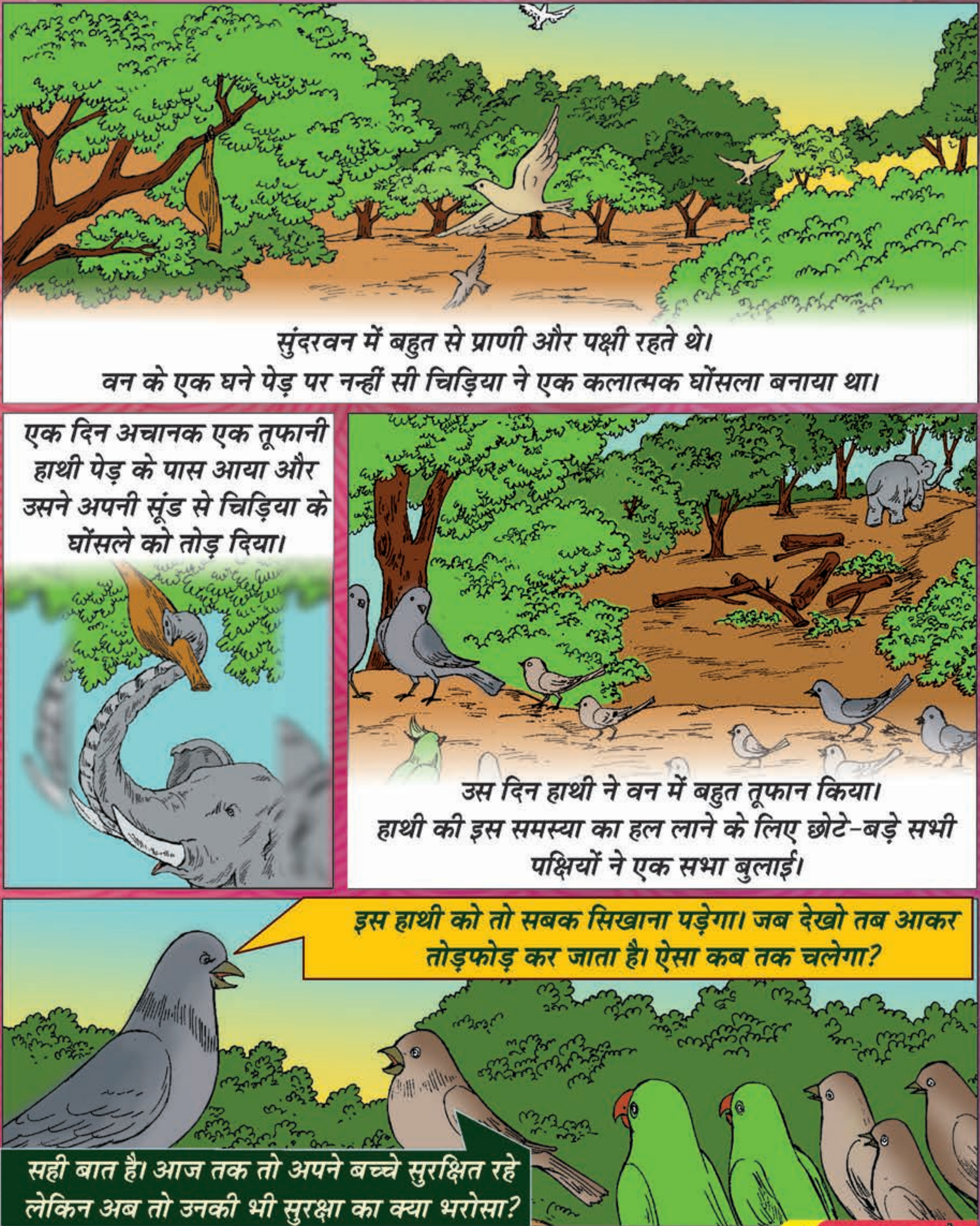

मुझे तो यह हाथी पागल लगता है। उसके सूप जैसे कान के अंदर चोंच से ऐसा घाव करेंगे कि वह इस जंगल से भाग जाए।"
मित्रों, हमें धीरज से काम लेना चाहिए। किसी भी निष्कर्ष पर आने से पहले हमें हाथी के इस व्यवहार के पीछे का क्या कारण है, वह पता लगाना चाहिए।
एक बार मैं हाथी को समझाकर देखती हूँ। यदि वह नहीं मानेगा तो हम दूसरा कोई उपाय करेंगे।
बया हाथी को ढूँढ़ती-ढूँढ़ती तालाब के पास पहुँची। तालाब में खड़े-खड़े हाथी अपनी सूंड हिला रहा था।
हाथी भाई, कितनी मेहनत से पक्षियों ने अपने घोंसले बनाए थे। उन घोंसलों में बच्चे कितने निश्चित और सुरक्षित थे।
तुम यह ज्ञान मुझे क्यों दे रही हो?
ज्ञान नहीं भान। आपने क्या किया उसका भान। यह सब तोड़फोड़ करने से आपको कुछ फायदा हुआ? लेकिन बहुत लोगों का कितना नुकसान हो गया, सही है न?
बया को जवाब दिए बिना हाथी सूंड हिलाता-हिलाता वहाँ से चला गया।
बया उड़कर तालाब में पानी पीने गई। लेकिन तालाब के अंदर का दृश्य देखकर चौंक गई।

उसने हाथी को आवाज़ लगाई।
हाथी भाई! हाथी भाई! रुको।
पीछे मुड़कर देखा तो तोता अपने दोस्तों के साथ हाथी पर आक्रमण करने के लिए आ रहा था।
रुको दोस्तों।
नहीं, अब तो हम इस पागल हाथी को सबक सिखाकर ही रहेंगे।
तोता आक्रमण करे उससे पहले, बया झट से जाकर हाथी की सूंड के निचले भाग पर जाकर बैठ गई। अपनी चोंच हाथी की सूंड के अंदर मारने लगी।
थोड़ी देर के बाद उसने हाथी की सूंड में से एक बड़ा काँटा निकाला।

मित्रों, जब मैं तालाब में पानी पीने गई, तब मैंने अंदर खून देखा और मुझे समझ में आ गया कि सूंड में ज़रूर कोई चोट लगी है। और पीड़ा की वजह से हाथी भाई तूफान कर रहे थे। किसी के संयोगों को जाने बिना, यदि हम उस पर आक्रमण करें तो वह कितना गलत कहा जाएगा? इसलिए धीरज रखकर काम लेंगे तो बात का हल आएगा।

काँटा निकालने के बाद हाथी को राहत महसूस हुई। उसे अपनी गलती का अफसोस हुआ।
मित्रों, मुझे माफ करना। मैंने आपको बहुत नुकसान पहुँचाया है।

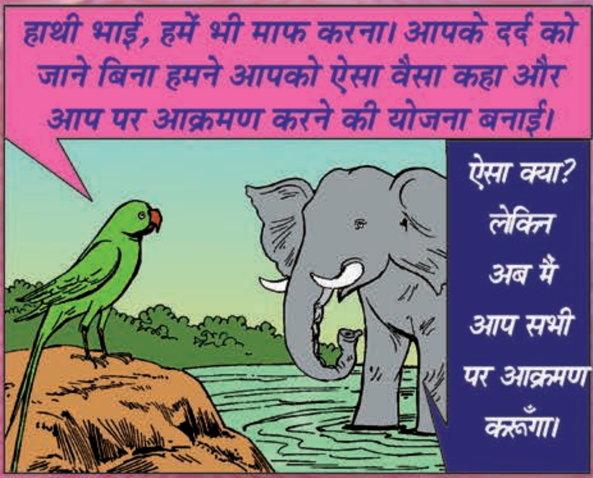
हाथी भाई, हमें भी माफ करना। आपके दर्द को जाने बिना हमने आपको ऐसा वैसा कहा और आप पर आक्रमण करने की योजना बनाई।
ऐसा क्या? लेकिन अब मैं आप सभी पर आक्रमण करूँगा।

तालाब में जाकर, हाथी ने अपनी सूंड में पानी भरा और सभी पक्षियों पर पानी का फव्वारा उड़ाया। हाथी की सूंड पर बैठकर, सभी पक्षियों ने बहुत मज़ा किया और शाम को अपने-अपने घोंसलों में वापस चले गए।

चलो

रास्ता ढूँढिए।

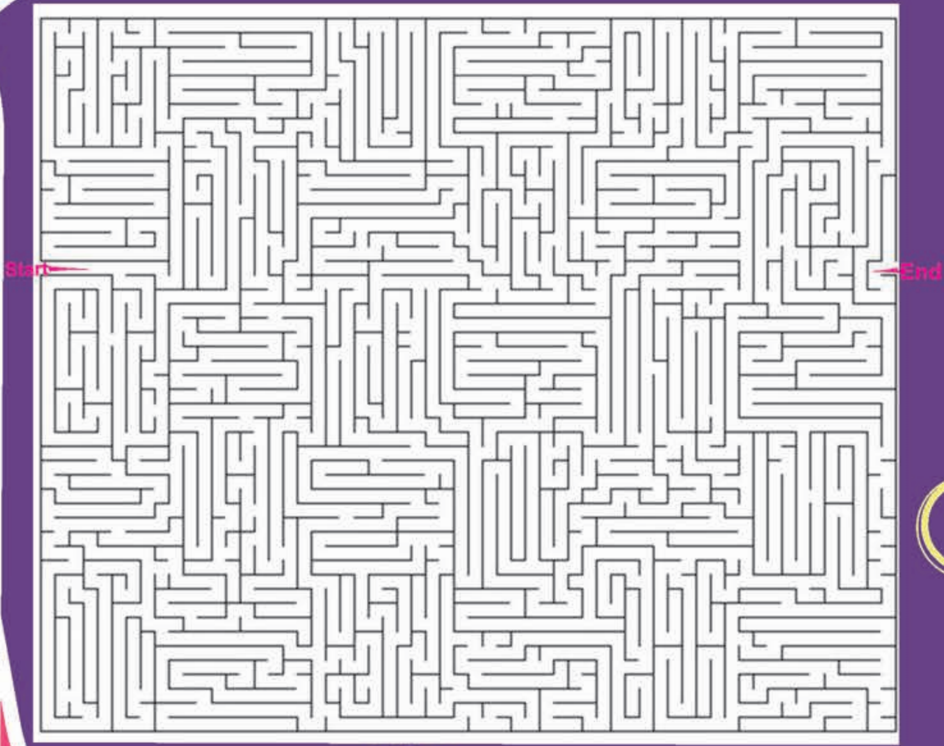

दोनों चित्र में क्या अंतर है?

खेलें...

बिंदुओं को जोड़कर चित्र पूर्ण करें।

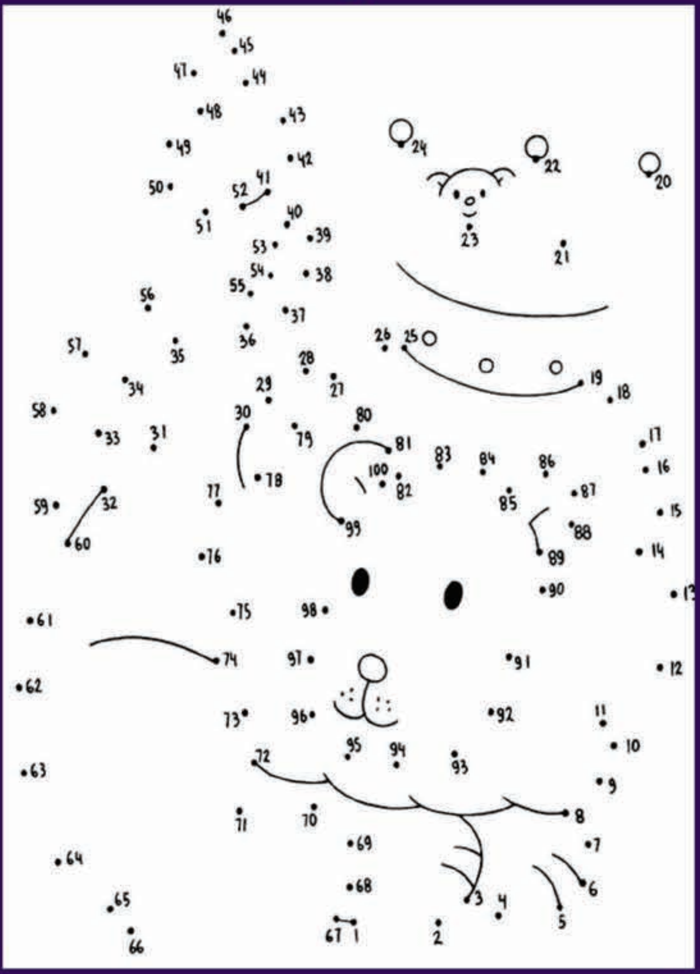

A से I सेट करके सुडोकु पूर्ण करें।

	A			G			B	
G		B		A	D			H
	H		B	F		A		
		D	C	I	A		F	
H			F	E	B			C
	I		H	D	G	E		
		I		C	E		H	
E			D	B		G		A
	B			H			E	

जब भगवान महावीर चंपानगरी के समवसरण में देशना दे रहे थे, तब राजगृही नगरी की तरफ जानेवाले अंबड परिव्राजक से उन्होंने कहा, "जब आप राजगृही जाओ तब नागसार्थिनी शीलवती श्राविका सुलसा से मेरा धर्मलाभ कहना।"

अंबड परिव्राजक को लगा कि, प्रभु महावीर जिस श्राविका को धर्मलाभ कहलवा रहे हैं, वह श्राविका धर्म और व्रत से कितनी सुशोभित होगी! अंबड परिव्राजक को सुलसा की धर्म भावना की अग्नि परीक्षा लेने की इच्छा हुई। इसलिए यति का भेष बनाकर सुलसा से सचित् की माँग की। लेकिन सुलसा बिल्कुल भी विचलित नहीं हुई। उसके बाद उसने ब्रह्मा का रूप लिया और नगरी के पूर्व द्वार पर चार मुख, राजहंस पर सवारी, अर्धांगे सावित्री ऐसा साक्षात् ब्रह्मा होने का दिखावा किया। इस चमत्कार को देखने पूरी नगरी आई, लेकिन धर्मनिष्ठ सुलसा की प्रभुनिष्ठा बिल्कुल भी विचलित नहीं हुई। दूसरे दिन उसने शंकर का, तीसरे दिन श्री विष्णु का और चौथे दिन तीर्थंकर का रूप बनाया। जैसे तीर्थंकर विराजमान हों ऐसा दृश्य तैयार किया। अंबड को ऐसा था कि कुछ भी हो तीर्थंकर के दर्शन करने के लिए तो सुलसा आएगी ही लेकिन सुलसा नहीं आई। दूसरी तरफ राजगृही नगरी का जन समूह उन पच्चीसवें तीर्थंकर के दर्शन करने के लिए उमड़ पड़ा। अंत में अंबड ने सुलसा को बुलाने के लिए किसी के माध्यम से निमंत्रण भिजवाया और साथ में कहलवाया कि सुलसा तो तीर्थंकर की परम उपासिका है और यदि वह खुद तीर्थंकर के दर्शन के लिए नहीं आए, तो कैसा लगेगा!

सुलसा ने निमंत्रण लानेवाले को जवाब दिया, "महानुभाव! ये पच्चीसवें तीर्थंकर नहीं हैं। बल्कि कोई धूर्त और मायावी मनुष्य तीर्थंकर बनकर बैठा है। यदि तीर्थंकर भगवान पधारें तो उसकी जानकारी तो वायु और वनस्पति आदि से भी सभी को हो जाती है। आज तो ऐसा कुछ नहीं हुआ, बल्कि उनको अपने आगमन की जानकारी देनी पड़ रही है।"

ऐतिहासिक गौरवगाथा

> "महानुभाव! ये पच्चीसवें तीर्थंकर नही हैं।
> बल्कि कोई धूर्त और मायावी मनुष्य तीर्थंकर बनकर बैठा है।"

सुलसा की अडिग धर्म श्रद्धा देखकर अंबड ने अपने अलग-अलग रूप समेट लिए। सुलसा के घर आकर अंबड ने कहा, "आप सचमुच बहुत भाग्यशाली हो। चंपानगरी में विराजमान भगवान महावीर स्वामी ने स्वंय आपको मेरे द्वारा धर्मलाभ कहलवाया है।"

यह सुनकर सुलसा के हृदय में रोमांच और आनंद होने लगा। उसकी वाणी भक्ति से गद्‌गद्‌ित हो गई। भगवान जिस दशा में विराजमान थे उस दिशा में वंदन करके भगवान की स्तुति करने लगी। उसकी भक्ति और श्रद्धा से अंबड परिव्राजक खुश हो गया।

सुलसा गुणवती, शीलवती और शांतिप्रिय स्वभाव की थी। उसे पुत्र योग नहीं होने की वजह से उसने अपने पति को अन्य कन्या से शादी करने के लिए कहा। लेकिन उसके पति नाग ने कहा, मेरे भाग्य में पुत्रयोग होगा तो वह तुम से ही होगा। उसके बाद सुलसा ने तपश्चर्या और धर्म आराधना शुरू की। उसकी भावविशुद्धिवाली आराधना से प्रसन्न होकर इंद्र ने देवसभा में उसकी प्रशंसा की तो हरिणैगमेषी देव ने उसकी परीक्षा की। वे साधु का भेष रखकर आए, और सुलसा से लक्षपाक तेल की माँग की। सुलसा लक्षपाक तेल का मटका लेकर आई, लेकिन देव ने अदृश्य होकर तेल का मटका गिरा दिया और तेल फैल गया। इस तरह चार मटके लाई और सभी को तोड़ दिया। फिर भी सुलसा के चेहरे पर चिंता की एक भी रेखा देखने को नहीं मिली। सुलसा की स्वस्थता, संकल्प शक्ति और जिन भक्ति देखकर देव ने उन्हें आशीर्वाद दिया और सुलसा को बत्तीस पुत्र हुए।

सुलसा ने पुत्रों को धर्म, कला, नीति और शास्त्र में पारंगत किया लेकिन राजगृही नगरी के श्रेणिक राजा के पक्ष में रहकर, चेटक राजा के विरुद्ध लड़ते हुए उसके बत्तीस पुत्र वीरगति को प्राप्त हुए।

सुलसा अत्यंत शोक में डूब गई। नगर जन उसमें सहभागी होने के लिए आए। उस समय अभय कुमान ने यह कहकर सुलसा और नाग को शांति दी कि शोक करते समय आर्तध्यान और रौद्रध्यान होने से विशेष कर्मबंध पड़ जाते हैं। उस सुलसा ने श्राविका की तरह उत्तम जीवन बिताया और समाधिमरण पाकर मोक्ष में गई।

जीवंत उदाहरण

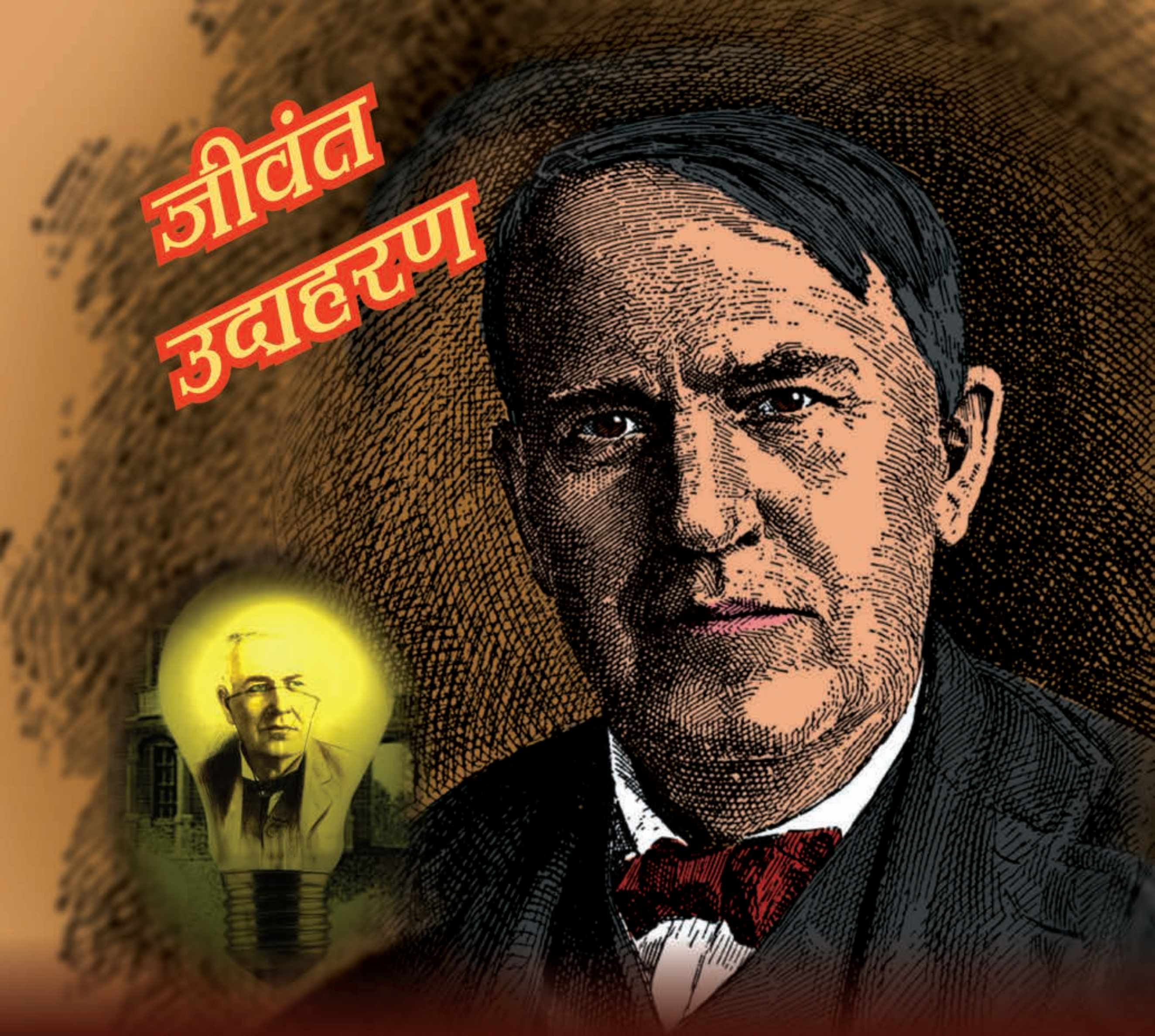

प्रसिद्ध वैज्ञानिक थॉमस एडिसन अत्यंत परिश्रमी और धीरजवान थे। वे एक लक्ष्य रखकर जो प्रयोग करते, उसे अंतिम स्थिति तक ले जाते। बीच में आनेवाली असफलताओं के अवरोध उन्हें डगमगा नहीं सकते थे।

एक बार एक प्रयोग करते समय अनेकों मुश्किलें होने पर भी एडिसन ने धीरज नहीं छोड़ा। कई प्रयत्न करने पर भी परिणाम नहीं मिल रहा था। थककर - हारकर एडिसन के साथी वैज्ञानिक, उन्हें उस प्रयोग को छोड़ देने के लिए कहने लगे, "ऐसा करते-करते तो ज़िंदगी खत्म हो जाएगी। इससे अच्छा तो अब हम दूसरी खोज पर ध्यान केन्द्रित करें। हम पाँचसौ बार तो हार चुके हैं। यदि आप इस प्रयोग को नहीं छोड़ेंगे तो हम आपको छोड़कर चले जाएँगे।"

लेकिन एडिसन को प्रयोग की सफलता पर पूरा भरोसा था। वे प्रयास छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने अपने साथियों को समझाया, "हम हारे नहीं है, प्रत्येक असफल प्रयोग हमें सफलता के नज़दीक ला रहा है।"

सहायकों ने मन-बेमन एडिसन की सहायता करना चालू रखा। अंत में एडिसन को अपने अद्भुत धीरज का फल मिल गया। और पाँच प्रयोगों के बाद ही प्रयोग सफल हो गया और एडिसन ने इलेक्ट्रिक बल्ब की दुनिया को अद्भुत भेंट दी।

धैर्य संतोष की चाबी है।

जिसके पास धैर्य रूपी धन नहीं है, उसके जैसा निर्धन और कोई नहीं है।

मनुष्य सिर्फ धीरज रखे तो सभी सफलताएँ मिल जाएँगी।

धैर्य मनुष्य की सच्ची वीरता है।

जो धैर्यवान हैं, वही अपने निर्धारित काम कर सकते हैं।

लोग निंदा करें या प्रशंसा लेकिन धीरपुरुष न्याय के मार्ग से विचलित नहीं होते।

धैर्य और पुरुषार्थ के द्वारा हम जो प्राप्त कर सकते हैं, वह शक्ति और जल्दबाज़ी से प्राप्त नहीं हो सकता।

सुवाक्य

माँ तो माँ हैं!

मीठी यादें

अहमदाबाद के एक महात्मा थे। जब नीरू माँ दादा दर्शन में रहते थे, तब वे वहाँ सत्संग में रेग्युलर आते थे। नीरू माँ दादा दर्शन से करीब २००१ या २००२ के शुरू में अडालज शिफ्ट हो गए। उन महात्मा का भी अडालज में मकान बन रहा था। इसलिए वे अहमदाबाद में ही थे। नीरू माँ अडालज गए, इसलिए उन्हें नीरू माँ का बहुत विरह लगने लगा।

कब नीरू माँ के पास जाऊँ.. कब जाऊँ.. ऐसा रहा करता था। उनका मकान तैयार होने में अभी डेढ़ साल बाकी था।

नीरू माँ अडालज गए इसलिए सुबह दादा दर्शन में जो दस बजे विधि होती थी उसमें भी ब्रेक आ गया। इसलिए उन महात्मा को बहुत भोगवटा रहता था।

अडालज से उन्हें समाचार मिला कि नीरू माँ रोज़ सुबह, वहाँ जो ८-१० फेमिली शिफ्ट हुए हैं, उनके साथ सत्संग करते हैं। इसलिए उन महात्मा का भोगवटा और भी बढ़ गया कि, "मैं रह गया"।

एक दिन रविवार को नीरू माँ दादा दर्शन सत्संग के लिए आए। वहाँ अन्य महात्माओं ने उनके विरह की बात की तो नीरू माँ बोले, मोक्ष २२ किलो मीटर ही दूर है।

यह सुनकर उन महात्मा को भान हुआ कि सही बात है। अडालज कोई ऐसी जगह नहीं है कि वहाँ वे जा नहीं सकते।

उसके बाद उन्होंने सुबह के सत्संग में अडालज जाना शुरू कर दिया। उनका सत्संग के लिए एडजस्टमेन्ट देखकर नीरू माँ बहुत खुश हुए।

नीरू माँ ने उनको मकान के बारे में पूछा। उन भाई ने कहा कि मकान अभी तैयार नहीं हुआ है।

नीरू माँ ने कहा, "क्या अन्य मकान अपने नहीं हैं? आपका मकान तैयार नहीं हुआ है तो "माँ" से कहो न! तो "माँ" कुछ भी कर दें।"

तब से जब भी उन भाई को शिविर में अडालज आना होता तो नीरू माँ उनके रहने की सुविधा कर देते।

माँ तो माँ हैं!

Amba School & Gurukul PRESENTS

Jalso

eat, enjoy, enlighten...

एक्सिबिशन

D	A	F	I	G	H	C	B	E
G	C	B	E	A	D	F	I	H
I	H	E	B	F	C	A	G	D
B	E	D	C	I	A	H	F	G
H	G	A	F	E	B	I	D	C
F	I	C	H	D	G	E	A	B
A	D	I	G	C	E	B	H	F
E	F	H	D	B	I	G	C	A
C	B	G	A	H	F	D	E	I

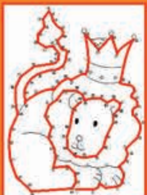

पज़ल के जवाब

Akram Express

February 2017
Year : 4, Issue : 11
Conti. Issue No.: 47

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

डिनर

कल्चरल शो

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २. पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published